Lecture - 147

गुप्तकाल भारतीय इतिहास का
स्वर्ण युग

- Mamta Rani
Guest Assistant Prof.
Deptt. of History.
~~BA~~
SNSRKS College,
Saharsa.

BA part - I.
Paper - 1st.

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

गुप्त काल मे ये तत्व मौजूद थे जिसके कारण कला विज्ञान और साहित्य अपने चरमोत्कर्ष को प्राप्त किया। इस काल मे संस्कृत को राजभाषा का दर्जा प्राप्त था जिससे संस्कृत साहित्य का अभूतपूर्व विकास हुआ। गुप्त सम्राटों ने उच्चकोटि के विद्वानों को संरक्षण प्रदान किया। कालिदास इस युग के विभूति थे। प्रसिद्ध कोशकार अमरसिंह इसी युग के थे। प्रसिद्ध दार्शनिक वसुबन्धु इसी युग मे थे। इसी काल ने आर्यभट्ट तथा वाराहमिहिर जैसे गणितज्ञ एवं ज्योतिषाचार्य उत्पन्न किये। कला एवं स्थापत्य के क्षेत्र मे इस समय उल्लेखनीय प्रगति हुई। मूसरा तथा नचना के शिव-पार्वति मन्दिर, सारनाथ तथा मथुरा की बुद्ध एवं विष्णु की मूर्तियाँ, अजन्ता की चित्रकारियाँ निश्चय ही भारतीय कला के इतिहास मे अपनी समकक्षता नहीं रखती।

गुप्तकाल भारतीयसंस्कृति के प्रचार और प्रसार के लिए प्रसिद्ध है। इससमय मध्य एवं दक्षिण पूर्वी एशिया मे हिन्दू संस्कृति का प्रचार-प्रसार हुआ।

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

फूनान, कम्बुज, मलाया, चम्पा, जावा, सुमात्रा, बाली, बोर्नियो, स्याम, वर्मा आदि इस समय के प्रमुख हिन्दू राज्य थे। प्रयाग प्रशस्ति मे 'सर्वद्वीपवासिभिः' का उल्लेख हुआ है। इससे तात्पर्य दक्षिण-पूर्वी एशिया के द्वीपो से है। गुप्तकाल मे अनेक भारतीय धर्म प्रचारक चीन गये तथा फाहियान नामक प्रसिद्ध चीनी भारत आया इसके अतिरिक्त तिब्बत, कोरिया, जापान तथा पूर्व मे फिलीपीन द्वीप समूह तक भारतीय संस्कृति का प्रसार हुआ। इस सांस्कृतिक प्रचार के फलस्वरूप 'वृहत्तर भारत' का जन्म हुआ जो गुप्तकाल को गौरवान्वित करता है।

इस प्रसंग मे उल्लेखनीय है कि आधुनिक युग के कुछ इतिहासकार जिनमें डा० डी० एन० झा, रोमिला थापर आ० एस० शर्मा, डी० डी० कौसाम्बी, एस० के मैती आदि शामिल हैं ने, गुप्तकाल को स्वर्ण युग कहना उचित नहीं मानते हैं। डा० डी० एन० झा का मत है कि "निस्सन्देह उच्चवर्ग के लोग सुखी और समृद्ध थे जैसा कि उस समय के साहित्य और कला मे प्रतिबिम्बित होता है परन्तु ऐसा निम्न श्रेणी के लोगों

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

के सम्बन्ध मे नहीं कहा जा सकता है क्योंकि उनकी अवस्था ठीक नहीं थीं। सामाजिक तनाव विद्यमान था। वर्ण-विभक्त समाज को कायम रखने के लिए धर्म के हथियार का प्रयोग किया जाता था। उच्च वर्ग के लोगों के लोगों के लिए इतिहास के सभी युग स्वर्ण युग है परन्तु साधारण जनता के लिए ये कभी स्वर्ण युग नहीं रहे। जनता का स्वर्ण युग अतीत के गर्भ मे नहीं परन्तु भविष्य के गर्भ में निहित है।"5 एस.के. मैती के अनुसार "स्वर्णयुग के लिए सम्पूर्ण समाज मे बेहतर सुविधायें अपेक्षित है तथा कृषक और स्वामी दोनो को आर्थिक स्वतंन्तता एंव सम्पन्नता प्राप्त होनी चाहिए"। 6 प्रो. डी. डी. कोसाम्बी मानते थे कि गुप्तकाल मे स्वामिभक्ति ने कृषकदासों और आदिवासियों को सामन्तीय प्रमुख के साथ एक शृंखला मे निबद्ध कर दिया"। 7 आर. सी. मजमुदार वी. ए. स्मिथ आदि के विचार के सामने सामाजिक आर्थिक इतिहासकारो का विचार थोड़ा पक्षतापूर्ण दिखाई पड़ता है। गुप्तकाल के साथ-2 सभी कालो मे उच्चवर्ग तथा निम्नवर्ग के जीवन मे भारी विषमता पाई जाती है। महिलाओं की स्थिति के बारे सिर्फ कामसूत्र मे

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

गणिकाओं को दिया जाने वाला प्रशिक्षण तथा ~~देवदासी का वर्णन कालिदास~~ कालिदास द्वारा महाकाल मन्दिर मे नृत्यगान करने वाली देवदासियों के विवरण से ही निर्धारित नहीं कर सकते। इस काल मे प्रदा प्रथा का प्रचलन नहीं था तथा स्त्रियाँ स्वतंत्रतापूर्वक विचरण कर सकती थी। गुप्तकालीन स्मृतियों मे स्त्री सम्पत्ति सम्बन्धी अधिकार को मान्यता प्रदान की गयी। नारद तथा कात्यायन स्मृतिकार कन्या को भी पिता की सम्पत्ति का अधिकारिणी मानते हैं। भारत वर्ण व्यवस्था का देश रहा है और इसके दोष भी हैं परन्तु सिर्फ इन्हीं सब बातों के संदर्भ मे भारत के इतिहास के किसी युग-विशेष न मानना भी उचित नहीं है। इस दृष्टि से देखेंगे तो विश्व इतिहास के किसी भी काल को स्वर्ण युग नहीं कह सकते। ~~इतिहास~~ आर्थिक पक्ष से भी गुप्तकाल को नकार नहीं सकते। स्कन्दगुप्त के पहले विशुद्ध सोने के सिक्के जारी किये गया। इस समय सर्वाधिक स्वर्ण मुद्रायें जारी किये गये। इस प्रकार आर्थिक, धार्मिक, साहित्यिक एंव कला-कौशल के क्षेत्र मे इस समय देश उन्नति की पराकाष्ठा पर पहुँच गया

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

तथा उन परम्पराओं का निर्माण हुआ जो आगामी शताब्दियों के लिए आदर्शस्वरूप बनी रहीं। अतः गुप्तकाल को प्राचीन इतिहास में 'स्वर्ण-युग' की संज्ञा से विभूषित करना उचित एवं तर्कसंगत प्रतीत होता है।

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz